

# 1. कामना

-श्री जयशंकर प्रसाद

## 1. नाटककार प्रसादजी का परिचय

काशी के विद्या और विनय से संपन्न सूखनी साहु के माहेश्वर-कुल में श्री साहु देवी प्रसाद जी के कनिष्ठ आत्मज के रूप में श्री जयशंकर प्रसाद का जन्म माघ, शुक्ल दशमी विक्रमीय संवत् 1946 को हुआ था। प्रसादजी का पालन पोषण सुखमय वातावरण में हुआ। प्रसादजी केवल सातवीं कक्षा तक पढ़ सके। क्यों कि बारह वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत होगया तो सारा कारोबार इनके बडे भाई और इन्हे ही संभालना पड़ा। अब वे घर पर ही अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और फारसी का अध्ययन करने लगे। साथ ही वेद, उपनिषद्, स्मृति, पुराण व बौद्ध-जैन ग्रन्थों का अनुशीलन किया। सत्रह वर्ष की अवस्था में भाई शंभुरत्न का भी देहान्त हो गया तो व्यापार की पूरी जिम्मेदारी उन्हीं पर आ पड़ी। दूकान में बैठकर ही उन्होंने कविता करने लगे थे।

प्रसादजी की बहुमुखी प्रतिभा थी। उन्होंने कविता, उपन्यास, नाटक, कहानियाँ व निबन्ध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। हिन्दुस्तानी एकाडमी, काशी नागरीप्रचारि सभा से उन्हे पुरस्कार मिले थे। जीवन के अंतिम दिनों में उन्हे राज्यक्षमा हो जाने के कारण सं. 1994 में उनका स्वर्गवास हो गया।

## रचनाएँ

1. नाटक - सञ्जन, कल्याणी-परिणय, प्रायश्चित, राज्यभी, विशाख, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, कामना, स्कन्दगुप्त, एक

घूँट, चन्दुगुप्त, ध्व-स्वामिनी।

2. काव्य - प्रेमराज्य, शोकोच्छेवास, कानन-कुसुम, प्रेमपथिक, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू, लहर, कामायनी।
3. उपन्यास - कंकाल, तितली, इरावती।
4. कहानी संग्रह - छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इन्द्रजाल।

अलावा इनके निबन्ध, चंपू, गीतिनाटक और आलोचना भी लिखे हैं।

प्रसादजी छायावादी काव्य के जनक और पोषक थे। वे प्रेम और सौन्दर्य के कुशल कवि थे। इनकी कविताओं में प्रकृति नाना रूप में उपस्थित हुई है। उनकी काव्य प्रेरणा का आधार ही प्रकृति है। प्रसादजी को भाषा पर सफल अधिकार था कि उन्होने वर्णन में सजीव चित्रण उपस्थित किया है। उनकी उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं में कल्पना की ऊँचे-से-ऊँची उड़ान मिलती है। उनके उपमानों में सर्वथा नवीनता है। उनके काव्यों में विशेषण विपर्यय का बहुमूल्यता है। उनका लौकिक प्रेम विकसित अलौकिक प्रेम में विलीन होने लगता है। उनकी भाषा में एक रसता है। उन्होने खड़ीबोली को परिमार्जित व परिष्कृत किया है।

## 2. सारांश

कामना श्री जयशंकर प्रसाद कृत, मानव मनोभावनाओं का मानवीकरण किया हुआ नाटक है। कामना इसकी नायिका है। कामना फूलोंवाले द्वीप की कन्या है। वह उस देश के उपासना गृह का नेतृत्व भी कर रही है। एक वृक्ष की छाया में लेटी हुई कामना अपने प्रेमी संतोष के सरे में सोचती है। प्रसादजी ने इस नाटक में स्वावलंबन बनने, कुटीर उद्योग की ओर भी

## कामना

संकेत किया है। द्वीप की महिलाएं कपास में ओट देना, सूत-कातना, बुनना आदि काम करते हैं। वहाँ न कोई राजा है और न कोई रंक। सब समान रूप से काम करते हैं और सुख से जीते रहते हैं। संतोष और विनोद जल्दी ही अपने खेतों का काम समाप्त कर आते वक्त उसी वृक्ष की छाया में थोड़ा आरम करने आकर बैठते हैं। संतोष कामना से प्यार करता था, लेकिन उसकी बाते, भाव-भंगिमा उसकी समझ में नहीं आ रहे हैं। इसलिए वह बिना व्याह ही रह जाना चाहता है। विनोद तो लीला की सरलता पर प्रसन्न है। वह उसी को व्याह लेगा। कामना संतोष से घुणा करती है, क्यों कि वह उससे हिचकता है। उसकी बहन लीला (सखी) उसे घर चलने को कहती है, पर वह नहीं जाती है। दूर पर वंशी बजाताहुआ, छोटी सी नाव में विदेशी युवक समुद्र-मार्ग से आता है। कामना सोचती है कि “मैं क्यों झुकी जा रही हूँ? और उसके सिरंपर क्या चमक रहा है, जो इसे बड़ा प्रभावशली बनाया है। इसका व्यक्तित्व ऐसा है कि मैं इसके सामने अपने को तुच्छ बना दूँ और अपने को समर्पित कर दूँ।” कामना उसका हाथ पकड़कर नीचे ले आती है। युवक अपना स्वर्णपट्ट खोलकर उसे पहनाता है। द्वीप के नियमानुसार उपासना मंदिर के आदेश मिले बिना कोई नवीन मनुष्य को उस देश में पैर रखने का अधिकार नहीं है। आजकल तो उपासना का नेतृत्व कामना के हाथ में होने के कारण और किसी के आदेश की आवश्यकता नहीं है। लीला उस स्वर्ण पट्ट को देखकर उसी के अनुसार स्वयं भी पाना चाहती है। कामना विलास से कहती है - हम बहुत दूर से आये हैं। विलोड़ित जल-राशी स्थिर होने पर यह द्वीप ऊपर आया, उसी समय हमलोग शीतल तारिकाओं

की किरणों की डोरी के सहारे नीचे उतर आये। इस द्वीप में अबतक तारा की ही संतान है। वहाँ चुप बैठने से यह जाति संतुष्ट नहीं थी। पिता ने खेल के लिए हमें यहाँ भेज दिया है। इन तारों की संतानों का खेल एक बड़े छिद्र से पिता देखा करते हैं। हम अपने खेल समाप्तकर उसी शीथल पथ से चले जाते हैं। यहाँ तो प्रत्येक स्त्री-पुरुष स्वतंत्रता से जीवन भर के लिए अपना साथी चुन ले सकते हैं। कामना द्वीप-भर की उपासना का नेतृत्व कर रही है तो उसे कुछ विशेष स्वतंत्रता भी है। दूर पर एक पक्षी बड़ा सुरीला बोलता है तो कामना घृटने टेक, सर झुकाकर ध्यान से उसका शब्द सुननी है। विलास से ठहरकर आने कहकर उपासना-गृह में जाती है। विलास सोचता है - महत्वाकांक्षा का अभाव और संघर्ष लेश गात्र भी नहीं है। ये जीवन की वक्र रेखाओं को सीधी करती हुई अस्तित्व का उपयोग हँसती हुई कर देती हैं। भाग्य से कामना आजकल उपासना का नेतृत्व कर रही है। परंतु मेरे वास्ते शीघ्र ही उसे अपने पद से हटना पड़ेगा। जब तक कामना इस पद पर है, उसी बीच में अपना काम कर लेना होगा। तबी एक स्त्री की छाया आकर उससे कहती है - “तुझे इस जाति को अपराधी बनाना होगा। जो जाति अपराध और पापों से पतित नहीं होती, वह विदेशी तो क्या, अपने सजातीय शासक की भी आज्ञाओं का बोझ वहन नहीं करती। समझ लो कि बिना स्वर्ण और मदिरा का प्रचार किये, तू इस पवित्र और भोली-भाली जाति को पतित नहीं बना सकता।”

लीला उसी चमकीली वस्तु के लिए लालाचित है। आज तक द्वीप के लोग यथा लाभ संतुष्ट रहते थे। ये सब अभाव तारा

## कामना

की संतानों के कल्याण के लिए गाड़ दिये गये हैं। यह ज्वाला सोने के रूप में सब के हाथों में खेलती है और मदिरा शीतल आवरण से कलेजे में उतर आती है। वनलक्ष्मी लीला से कहती है “केवल तू ही उस अग्नी का ईंधन बनकर विनाश न कैला। महार्णव से मिलती हुई तरंगिणी के जल में चुटकी लेता हुआ शीतल और सुगंधित पवन इस देश में बहने दें। इस देश के थके कृषकों को विनोदपूर्ण बनाने के लिए, यहाँ के वृक्षों को फूल बरसाने दे। आग, लोहे और रक्त की वर्षा की प्रस्तावना मत कर। इस विश्वभरा को, इस जननी को धातु निकाल कर खोखली और निर्बल बनाने का समारंभ होने से रोको। जिस दिन तुम चमकीली वस्तु के लिए हाथ पसारा, उसी दिन इस देश की दुर्दशा का प्रारंभ होगा।” लीला कामना से वन-लक्ष्मी की सारी बातें कहती है। कामना प्रसन्नता से कहती है “‘प्यारी लीला मैं तुझे वह स्वर्ण अवश्य दिलाऊँगी। फिर पेय (मदिरा) जो कामना ने लीला के ब्याह की खुशी में भेजी है, उसमें से कामना और लीला पीती हैं। लीला उसका मज्जा लेती हुई मदिरा के बारे में सुनलेती है। फूलोंवाले द्वीप में मदिरा का संचालन आरंभ हो जाता है। फूलों के मुकुट से सजाहुआ विनोद आता है। कामना दोनों को हार पहनाती है और पात्र लेकर दोनों को एक में पिलाती है। फिर पीछे से आशीर्वाद देती है। दोनों मदिरा पीकर पात्र खाली कर देते हैं। फिर कामना उन्हे उपासना गृह में आने कहकर सोचती हुई जाती है - वह (विलास) आतिथि होकर आया, आज स्वामि है। उसके दर्शन ने सुख भोगने के नये-नये आविष्कारों से मस्तिष्क भर दिया है। वह गाती है। उसके गाने से विलास बेहद संतुष्ट हो जाता है।

उपासना गृह में सब एकत्रित होकर उपासना करते हैं। विलास अपना संदेश उन सब को सुनाना चाहता है। द्वीपवासी विरोध करते हैं। कामना की आज्ञा पर सब सुनने तैयार हो जाते हैं। असंतुष्ट नागरिक कल से अपनी उपासना में कोई दूसरे व्यक्ति का नेतृत्व चाहते हैं। विवेक कहता है - आज तक उसे पिता समझते थे और हम लोग कोई अपराध नहीं करते थे। करते हैं - “केवल खेल, खेल का कोई दण्ड नहीं है। हम लोग न्याय-अन्याय, अपराध और अच्छे कर्म आदि नहीं समझते हैं। हम खेलते हैं, और खेल में हम एक-दूसरे का सहायक हैं। पिता अपने बच्चों का खेल देखता है तो कोप क्यों?” हमारे यहाँ कोई वस्तु निषेध नहीं है। हम वही करते हैं जो हम जानते हैं और जो जानते हैं वह सब हमारे लिए अच्छी बात है। निषेध का घोर नाद करके तुम पापकृयों का प्रचार करते हो? वह हमारे लिए अज्ञात बात है। तुम ज्ञान को अपने लिए सुरक्षित रको। हम आपके आज्ञाकारी हैं। आपके नेतृत्व काल में अपूर्व वस्तु देखने में आयी। और कभी न सुनी हुई बातें जानी गयी। उन सब को उपहार के रूप में विनोद और लीला मंदिर पिलाते हैं। सब पीकर कहने लगे “यह तो बड़ी अच्छी पेया है।”

विलास कामना के साथ नवीन मन्दिर में कहता है - “केवल उपासना में प्रधान बनने से काम न चलेगा। जब तक तुम रानी नहीं बन सकती तब तक मैं दूसरे को स्वर्णपट्ट नहीं पहनाऊँगा। रानी बनने में तुम्हे अभी देर है। क्यों कि अपराध का बीज अब हम सब के हृदयों में है। इसलिए अपराध अभी प्रकट नहीं है।” विलास शराब की भट्टी और सुनार की धोंकनी कामना को दिखाता है। गलाया हुआ बहुत-सा सोना रखा है। मंजूषा

## कामना

में से एक कंकण उठाकर कामना को दिखाता है। लीला प्रवेश कर कहती है - “सब स्त्री-पुरुष उपस्थित है।” विलास सब को पिलाना चाहता है। वह लीला से कहता है - “तुम्हे भी सुवर्ण मिलेगा, तुम इतनी उतावली क्यों है?” विलास लोगों से प्रतिज्ञा कराता है - “कामना जो कहेगी, वही तुम लोग करेंगे आज का रहस्य तुम किसी से नहीं कहोगे।” सब मान लेते हैं। विलास एक छोटा सा हार लेकर लीला को पहना देता है। कामना क्षोभ से देखती है। कामना सब लोगों का स्वागत करती है तो वे आकर बैठ जाते हैं। कामना और लीला सब को पंक्ति में बिठाकर मद्य पिलाती हैं। सब प्रसन्न होते हैं। मद-मस्त नागरिकों को विलास एक-दूसरे की स्त्री को दिखाकर एक-एक स्त्री को चुनने के लिए कहता है। नशे में वे एक-दूसरे की स्त्री को अच्छी समझते हैं और उनका हाथ पकड़ लेते हैं। विलास उन्हे मण्डलाकार में खड़ा कर, बीच में कामना को सब की देख-रेख के लिए नियुक्त करता है। वह रानी बनकर खेल का संचालन करती है। विलास चन्द्रहार और कंकण कामना को पहनाता है। कामना के संकेत पर नृत्य आरंभ होता है। विलास गाता है, सब उसका अनुकरण करते हैं। विवेक आकर उसे नरक बताता है, फिर क्षोभ से भाग जाता है।

एक जंगल में विलास, कामना, विनोद और लीला बातें कर रहे हैं। उनके साथ चार युवक धनुष और तीर के साथ आकर मिलते हैं। उनका एक दल बन जाता है। विलास के कहे अनुसार सब लोग भयानक चीत्कार करते हैं और तालिया पीटते हैं तो पशु झाड़ियों के भीतर दौड़ते हैं और इनके तीर लगने पर छटपटाते हैं। वहाँ की हरी घास रक्त से लाल होकर भयानक हो उठती

है। और पवन भाराक्रांत होकर चलने लगा है। कामना विलास से व्याह करने के लिए कहती है तो विलास उसे समझता है - “तुम मेरी हो। परंतु इस विदेशी युवक से व्याह करके तुम सुखी न हो पाओगी। क्यों कि मुझे यहाँ से चला जाना होगा। मैं तुम्हे रानी इसलिए बनाया कि तुम नियमों का प्रवर्तन करो। इस नियम-पूर्ण संसार में अनियमित जीवन व्यतीत करना मूर्खता है। मनुष्यों के कल्याण के लिए उसका उपयोग करना पड़ेगा। इसीका अनुकरण, निग्रह-अनुग्रह की क्षमता के केन्द्र में प्रतिफल संतुष्ट रखने का साधन राजशक्ति है। देश के कल्याण के लिए उसी तंत्र का प्रचार किया गया है। तुम रानी बनायी गयी हो। तुम्हे इस द्वीप की एकच्छत्र अधिकारिणी देखना चाहता हूँ। उसमें हिस्सा नहीं बाँटा।” विलास कामना की सब सेवा में प्रस्तुत रहकर, द्वीप भर में उसे कुमारी ही बना रह कर अपना प्रभाव विस्तृत करना चाहता है। अब द्वीपवासी क्रूर होते जा रहे हैं। उनकी आँखों में क्रूरता, निर्दयता और हिंसा दौड़ने लगी हैं। लोभ से वे भेड़ियों से भी भयानक बन पड़े हैं। वे जलते आग में दौड़ने के लिए उत्सुक हैं। उनको अब कठोर सोना और तरल मंदिरा चाहिए। दो मद्यप लीला के चरित्र के बारे में कलंक लगाते हैं। उनके मन में वहाँ आनेवाले शांतिदेव को मार कर उसके पास जो अपार सोना है, उसे पाने की भावना आती है। व्यभिचार ने उन्हे स्त्री-सौन्दर्य का कलुषित चित्र दिखलाया है, मंदिरा उस पर रंग चढ़ाती है। अब लोग सौन्दर्य के लोलुप हो गये हैं। फूलों के द्वीप के फूल अब मुरझाकर अपनी हात से गिर-पड़ने लगे हैं। उनके सौरभ से देश-वासियों के घर अब नहीं भरते हैं। शांतिदेव आकर सोने के गांठ को कहीं छिपाने

## कामना

के लिए जगह ढूँढ़ता है। वह भयभीत हो रहा है। पहले द्वीप में यह बात नहीं थी और तब सोना भी नहीं था। फिर एक पगड़ंडी से निकल जाना चाहता है तो दोनों द्वीपवासी तीर चलाकर शांतिदेव की हत्या कर देते हैं और सोना खोज लेते हैं। विलास और कामना आकर शिकारियों से उन हत्यारों को बाँधने कहते हैं। शिकारी उन्हें पकड़ते हैं और शांतिदेव को भी उठाकर ले जाते हैं।

कुटीर में लीला विनोद से स्वर्ण पट्ट पूछती है। विनोद उसे विश्वास दिलाता है कि अब अपराध होना आरंभ हो गया है। उन हत्यारों को मित्र परिवार के लिए बने नये घर में बन्दकर रखते हैं। दो शिकारियों को वहाँ रक्षक नियत किया जाता है। इस योजना से उन्हे लाभ होनेवाला है। लीला विनोद को पिलाकर गाती है। कामना अपराधियों के निरीक्षकों को ठहरने और जीवन-निर्वाह का प्रबन्ध करने की आज्ञा देती है। कामना विनोद को सेनापति घोषित कर, उससे प्रबन्ध करने और आतंक को रोकने के लिए कहती है। विलास उसे छोटा-सा स्वर्ण पट्ट पहनाता है और कामना तलवार हाथ में देती है। शिकारियों से रानी कामना कहती है - “आज से जो लोग विनोद की आज्ञा नहीं मानेंगे, उन्हें दंड मिलेगा।” सब घृटने देककर स्वीकार करते हैं। विलास विनोद से कहता है - “तुम राजमुकुट के अन्यतम सेवक हो। राजसेवा में प्राण तक त्याग देना तुम्हारा धर्म है।” विनोद सैनिकों के साथ परिक्रमण करता है।

द्वीप के बच्चे दुर्बल, चिंताग्रस्त हैं। स्त्रियाँ भी व्याकुल हो गये हैं और उनमें कृत्रिमता का समावेश हो गया है। व्यभिचार ने लज्जा का प्रचार कर दिया है। छिपकर बाते करना, कानों

में मंत्रणा, छूरों की चमक से त्रास उत्पन्न करना, वीरता के नाम से किसी अद्भुत पदार्थ की ओर दौड़ना युवकों का कर्तव्य हो रहा है। वे शिकार और जुआ, मंदिरा और विलासिता के दास होकर गर्व से छाती फुलाये घूमते हैं। धीरे-धीरे लोग सभ्य होने लगे हैं। सब एक-एक पात्र मंदिरा के लिए लोलाचित होकर दासता का बोझ वहन करते हैं। हृदय में व्याकुलता मस्तिष्क में पाप-कल्पना भरी है। थोड़े से लोग छल और प्रवंचना से सोने का ढेर एकत्र कर द्वीप भर को दास बनाये रके हैं। कल स्वयं भी ऐश्वर्यवान होने की अभिलाषा में बाकी लोग भी पतित होते जा रहे हैं। दोनों उपासना गृह में होने वाली शासन सभा में भाग लेने जाते हैं। विलास स्वगत कहता है - “इस बड़े रमणीय देश में ये भोले-भाले प्राणी हैं। इन में भावों का प्रचार उपयुक्त ही हुआ। अब यह देश शाप-ग्रस्त और संघर्ष-पूर्ण होकर अत्याचार-ज्वाला से दग्ध हो चला है। यहाँ मुझे शीतल छाया मिली, पर मैंने क्या किया? वही ज्वाला यहाँ भी फैलाया। नवीन पापों की सृष्टि हुई। अब सब द्वीपवासी मानसिक नीचता, पराधीनता, दासता, द्वन्द्व और दुखों के अलातचक्र में दग्ध हो रहे हैं। आनंद के लिए सब किया, पर वह कहाँ है? मन में आनंद नहीं है तो कहाँ भी नहीं है।”

विलास इच्छा के बीजारोपण कर, उसके अंकुरों की सुरक्षा के लिए, सूर्य ताप से बचाने के लिए, अनंत आकाश को मेघों से ढंक देना चाहता है। विलास कामना के बारे में सोचता है - कामना, रानी होने योग्य सुन्दर स्त्री है। उसने व्याह का प्रस्ताव किया था। परंतु मेरी मानसिक अव्यवस्था, छाया-चित्र दिखलाती है। कोई दुष्ट शक्ति संकेत कर रही है - नहीं, कामना एक

कामना

गर्व-पूर्ण, सरल हृदयी रक्षी है। निरीह इन्द्रधनुष के समान उदय होकर विलीन होनेवाली है। तेज होने पर भी वेदी के धधकाने से जलनेवाली ज्वाला है। वह उसको अपना हृदय समर्पित नहीं करना चाहता है। वह फूलों के द्वीप में मधुप के समान विहार करना चाहता है। और उस देश के अनिर्दिष्ट आकाश-पथ का धूमकेतु है। उसकी महत्वाकांक्षा ने समय और अवकाश की सृष्टि कर दी है। पदार्थों के द्वारा नई सृष्टि के साथ कूहेलिका सागर में विलीन हो जाना चाहता है।

नवीन रूप में उपासना गृह सुसज्जित है। विलास लोगों को अभिवादन करना सिखला रहा है। कामना राजदण्ड लेकर आती है। सिंहासन के नीचे वेदी पर खड़ी होकर प्रार्थना कर, आसन पर बैठती है। विलास उपस्थित लोगों से कहता है - तुम अपने कल्याण के लिए, अपनी सुव्यवस्था के लिए, न्याय और दण्ड के लिए इनको अपना अधिपति मानते हो। अपराधियों को दण्ड देने रानी की आवश्यकता है। वह ईश्वर की प्रतिनिधि है। तुम लोग उसकी आज्ञा और नियमों का पालन करें। तुम्हारे कष्टों को मिटाने उसने पवित्र कुमारी होने का कष्ट उठाया है। उसके संकल्प हमारे कल्याण के लिए होंगे। कामना भी कहने लगती है - तुम सब सुखी होंगे। मेरे दो हाथों में एक न्याय करेगा तो दूसरा दण्ड देगा। दण्ड के लिए सेनापति नियुक्त है। पर न्याय में सहायता करने एक मंत्री, परामर्शदाता की आवश्यकता है। तब कामना विलास को ही उस पद के लिए उपयुक्त समझती है। सब लोग सहमत हो जाते हैं। कामना एक स्वर्ण पट्ट विलास को पहनाती है। सेनापति और मंत्री रानी के दोनों तरफवाली कुर्सियों में बैठ जाते हैं। अपराधियों को प्रस्तुत करने पर विचार

होता है। उनका कहना है - मेरे पास जो वस्तु नहीं थी, उसीको लेने के लिए हम लोगों ने शांतिदेव पर तीर मारा, वह मर गया। कामना कहती है - “तुम लोगों ने थोड़े से सोने के लिए एक की हत्या कर डाली। यह घोर दुष्कर्म है।” विलास इन हत्यारों को कठीर दण्ड देने के लिए कहता है। इस समय सोने की आवश्यकता समग्र द्वीपवासियों को है। उन हत्यारों को अंतिम दण्ड फिर सुनाने की बात कहने पर उन्हे वहाँ से निकाला जाता है। कामना सभी उपस्थित पुरुषों को स्मरण-चिन्ह लाकर देने के लिए विनोद से कहती है। वह द्वीपवासियों से कहती है - “मेरे प्यारे द्वीपवासियों, मेरी इच्छा है कि प्रत्येक द्वीपवासी स्वर्ण के आभूषणों से लद जाये। उनकी प्रसन्नता के लिए प्रचुर साधन एकत्र करेंगी, जिस काम में आप सब को साथ देना होगा।” सब सहमत हो जाते हैं।

शांतिदेव की बहन लालसा अब एकाकिनी हो गयी है। वह सोचती है - “यह जीवन बोझिल हो गयी है। इतना सोना है, परंतु इसका भोग-सुख नहीं। जीवन के अनंत सुख-भोग होने पर भी रोकर बिताती हूँ। सब सुखी है। कामना रानी है। यह भी तो इसी द्वीप की लड़की है। फिर कौन-सी बात ऐसी है, जो मेरे रानी होने में बाधक है। यदि विलास को आकर्षित करूँ तो मैं भी रानी हो सकती हूँ। अपने आभूषणों एवं वेष-भूषा को सँवारती है और गाती है। विलास आकर उसके गाने की प्रशंसा करता है - “इस मरुभूमि में मीठे पानी का स्रोत छिपा हुआ है। यह अमृत-वर्षा मुझे नहीं विदित था।” लालसा निष्ठुरता से बातें करती हुई उसे बैठने के लिए कहती है। लालसा सच-मुच सुन्दरी है। उसको जाँचने के बाद ही मानने तैयार होती

है। विलास उसकी सुन्दरता को मान लेता है और उसी गाने को और एक बार सुनाने कहता है। लालसा उसे मंदिरा पिलाती है। फिर किसी दिन मिलने की बात कहकर विलास चला जाता है। कामना रक्षकों के साथ आती है। लालसा अपने दुःख को सुनाती है और कहती है - “अब वह अकेली है। और अपने स्वर्ण के लिए दिन रात भयभीत रहती है। जब आवश्यकतानुसार सब के पास स्वर्ण हो जायेगा तो यह अशांति दबेगी। यह भी बताती है कि शंतिदेव के पास इतना सोना कहाँ से आया।” नदी के उस पार निर्जन प्रदेश है। शांतिदेव ने साहस कर उधर की यात्रा की और बहुत से पशु-असभ्य मनुष्यों से बचकर यह सोना ले आये। यहाँ आए तो लोगों ने देख लिया और उनकी हत्या हो गयी। उन हत्यारों को दण्ड देने कहती है। कामना उससे मृगया महोत्सव में भागलेने और वहीं पर सब प्रबन्ध करने की बात कहती है।

एक जंगल में वृक्ष के नीचे करुणा की (लालसा की बहन) कुटी है, वह अकेली बैठकर सोच रही है। संतोष प्रवेशकर फूलोंवाले देश की प्राकृतिक रमीयता का वर्णन करता है। अब वह सुख-सुन्दरता गायब है। सब स्वर्ण के अधीन हो गये हैं। हृदय का सुख खो गया है। करुणा उसी देश की अभागी नारी है। जीवन के साधारण सुख भी धन के आश्रय में पलते हैं। उसका अभाव दरिद्रता। दरिद्रता सब पापों की जननी है और लोभ उसकी सबसे बड़ी संतान है। सुख तो मान लेने की वस्तु है। उस देश में सुख के संगीत सुनाई पड़ते थे। वृक्षों में, कुंजों में हलचल और पत्थरों में ज्ञनकार उठती थी। अब केवल एक क्षीण क्रंदन बोलता है। उस द्वीप में सब एक कुटुंब थे, अब अनाथ।

जब से शांतिदेव की हत्या हुई, तब से करुणा अनाथ, निस्सहाय हो गयी है। उसकी बहन लालसाने सब धन अपनाकर, उसे घर में भी रहने नहीं दिया है। वह वृक्ष के नीचे कुटीर बनाकर जंगली फलों पर निर्वाहि कर रही है। सबके विनिमय के लिए सोना अब चाहिए। इसलिए करुणा संसार के कोई पदार्थ नहीं पा सकती है। प्राकृतिक अमूल्य पदार्थों का मूल्य हो गया है। वस्तु के बदले आवश्यक वस्तु न मिलने से प्राकृतिक साधन भी दुर्लभ हैं। सब सोने के लिए पागल हैं। अकारण कोई, कही भी बैठने नहीं देता है। जीवन के प्रत्येक प्रश्न के भूल में अर्थ का प्राधान्य है। करुणा अपनी निर्धनता के आँसू पीकर कुटीर में पड़ी रहती है। उसकी करुण कथा सुनकर, उंसी दिन से संतोष उसका भाई बनकर, उसके लिए हल चलाना, अनाज पैदा करना चाहता है। जिसका कोई नहीं है, वह उसका होकर सब काम करेगा और उसके दुख को भी दूर करेगा। करुणा फल खिलाने संतोष को कुटीर के अंदर ले जाती है।

जंगल में लोग मांस भून रहे हैं, मद्य चल रहा है। शिकार के लिए खोज हो रही है। विलास, विनोद, कामना, लालसा और लीला का प्रवेश होता है। कामना सब से कहती है - लालसा सोने की भूमि जानती है। वह तुम लोगों को बताएगी। सब कष्ट उठाकर सुवर्ण को पाने तैयार हो जाते हैं। उस खुशी में विनोद सब के लिए वन भोज की आयोजना करता है। लालसा अपने भाई शांतिदेव के हत्यारों को दण्ड देने पर ही जगह दिखाने तैयार होती है। विवेक प्रवेश कर कहता है - “इन्होने एक हत्या की थी सोना पाने के लिए, परंतु आप लोग उदर पोषण के लिए सामूहिक रूप से आज निरीह प्राणियों की हत्या का

महोत्सव मना रहे हैं। कल इसी प्रकार मनुष्यों की हत्या का आयोजन होगा।” हत्यारों के साथ सैनिक का प्रवेश होता है। उन्हें एक वृक्ष बाँध दिया जाता है और विलास - कामना की आज्ञा पर उन्हे तीर मारकर मार डालते हैं। अब वहाँ अपराध से गपराध परंपरा की सृष्टि हो गयी है। विवेक का कहना है कि तुम पहले इससे भी विशेष असभ्य थे। आज शासन सभा का आयोजन कर सभ्य कहलाने वाले पशु बने हैं। लालसा उनके साथ चलने तैयार होता है। विलास उस देश पर आक्रमण की आयोजना करने की आज्ञा देता है। वनभोज समाप्त हो जाने पर आक्रमण करने सब तैयार होते हैं। सब लोग (स्त्री-पुरुष) एकत्र बैठकर मद्य-मांस का भोजन करते हैं। सबका विकट-नृत्य शुरू हो जाता है। विनोद उपकारिणी लालसा के कष्टों का ध्यान कर, अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का अच्छा अवसर मानकर, उसके ब्याह की प्रार्थना नागरिकों से की जाने का प्रस्ताव रकता है। सब उसके प्रस्ताव को मान्यता देकर, “परम उपकारी विलास ही इस प्रार्थना को स्वीकार करें” - कहते हैं। विनोद लालसा का हाथ और लीला विलास का हाथ पकड़कर मिलाते हैं। कामना त्रस्त हो कर, दूर पर खड़ी होकर आश्चर्य और करुणा से देखती है। स्त्रियाँ उन्हे घेरकर नाचती हुई गाती हैं।

परिवर्तित परिसर में आचार्य दंभ की नवनिर्माण योजना सफल हो चली है। बहुत लोग वहाँ जा कर बसने लगे हैं। वहाँ धर्म, संस्कृति और धर्म प्रचार का केन्द्र, सुन्दर महल, सार्वजनिक भोजनालय, संगीत-गृह और मन्दिर सब हैं। ये देहाती लोगों को आकर्षित करने वाले हैं। वहाँ व्यय की प्रचुरता के कारण अधिक स्वर्ण की आवश्यकता है। स्वर्ण के आश्रय में ही संस्कृति और धर्म

बढ़ सकते हैं। स्त्रियों को, आभूषणों के लिए अधिक स्वर्ण की आवश्यकता है। प्रमदा स्त्रियों की स्वतंत्रता के लिए, नवीन वेष-भूषा से अद्भुत लावण्य का सृजन करने के लिए एक मन्दिर खोलना चाहती है। वह वैवाहिक जीवन को घृणा की दृष्टि से देखती है। दुर्वृत्त का कहना है - “इतने मनुष्यों को एकत्र रहने के लिए सुव्यवस्था, नियमों का प्रचार, अधिकारों की उत्पत्ति करना होगा। विवाद उत्पन्न होंगे तो हमें लाभ होंगे।” क्रूर के अनुसार, विलास जीवन के परिणाम-स्वरूप रोग उत्पन्न होंगे, अधिकारों को लेकर झगड़े और मार-पीट होंगी। संस्कृति का जो आंदोलन हो रहा है, वह फूलों के द्वीप में भी छिपा नहीं है। सब बराबर बनने के लिए समाज में नवीन सृजन हो रहे हैं। दंभ इसका संचालन स्वयं करना चाहते हैं। योग्यता और संस्कृति के अनुसार पदों में श्रेणी-भेद, समुन्नत-विचारवालों को विशिष्ट स्थान-मान, धर्म, संस्कृति और समाज की क्रमोन्नति में अनेकों केन्द्र बनाकर स्वतंत्र रूप से सहायता करने पर मानव जाति समृद्ध और आनंद पूर्ण होगा। वे वहाँ रह कर युद्ध और आक्रमणों से बचना चाहते हैं। विवेक आकर उन बड़े महलों को बनाने का उद्देश्य-अनंत काल तक जीवित रहकर दुःख भोगना-कहता है। उस नव नगर में सब नीच बनकर, स्त्री की ओर प्यासी आँखों से देखते हैं। कपड़ों के आडंबर में अपनी नीचता को छिपाने लगे हैं। उन लोगों ने नगर बसाकर धोखे की टट्टियों और चालों का प्रस्तार किया है। अतः विवेक उन्हें उस नैसर्गिक जीवन की ओर लौट जाने को कहता है। सब उसे पागल, नीच, अस्पृश्य कहकर वहाँ से भाग जाने के लिए कहते हैं। वह उस नगर रूपी अपराधों के घोंसले से भाग जाने तैयार है, पर उन लोगों की दुर्गति की चिंता से पछता रहा है।

स्कंधावर के पट-मण्डप में कामना रानी का हृदय चंचल होकर मछली के समान तैरता है, पर उसकी प्यास नहीं बुझी। नक्षत्र-लोक से मधुर वंशी की ज्ञनकार निकल रही है। गानेवाला कोई नहीं है। संतोष कामना से पूछता है-अब भी मेरी आवश्यकता है या नहीं। जब कामना विजयमाला उसे पहनाना चाहती थी तब उसने टोकर मारकर कामना की कल्पना को स्वप्न बना दिया था। दासियाँ आकर रानी कामना की चिंता, उदासीनता का कारण पूछती है और देश में रहनेवाले अन्य बहुत युवकों में किसी से व्याह करने को कहती हैं। कामना एक पवित्र कुमारी रही हैं। वह सोने से लदी हुई, परिचारिकाओं से घिर हुई, अपने अभिमान साधना की तपस्या कर रही है। उसके मन बहलाने के लिए एक दासी गीत गाती है। विलास के आते ही उस नव निर्मित नगर के बारे में पूछती है। युद्ध के बाद विलास बताना चाहता है। सेनापति विनोद आज मदिरा से उन्मत्त रहने के कारण विलास को ही सेनापति का काम निभाने के लिए कामना कहती है। लीला और लालसा भी रणक्षेत्र में विलास के साथ देनेवाली हैं। मद्यप विनोद आकर कहता है - “दस घडे रक्त को बहाकर, यदि एक पात्र मदिरा पी ले तो सबकुछ हो जाएगा। इस देश से बहुत-सा सोना घर भेजा गया है। वहाँ नये सौन्दर्य-साधन बनाये जा रहे हैं। लाल रक्त गिराने से पीला सोना मिलेगा, यह कैसा अच्छा खेल है?” अब रानी अकेली है, वह सेनानायक विनोद को अपने पट-मण्डप में चलकर साथ रहने कहती है। नवनिर्मित नगर में नये संदेश, नये उद्देश्य और नयी संस्थाओं का प्रचार अब सोना और मदिरा के बल से हो रहा है। विलास विजयी होकर प्रवेश करता है। कामना संतृष्ट होकर उसे आराम

करने के लिए कहती है। उससे स्त्री को पकड़ने का अपराध पूछती है। वह रोष से कहता है - "स्त्री और स्वर्ण तो लूट के उपहार के रूप में मिलते हैं। विजयी के लिए यही प्रसन्नता है और उस बन्दिनी को अपने यहाँ भेज देने को कहता है। बन्दिनी नारी, उस नरपिशाच-विलास से बचाने की प्रार्थना रानी से करती है।

नगर से आ रही लालसा अपने जीवन संगी को छूँढ़ रही है। प्रमदा के स्वतंत्रता भवन के आनंद विहार से भी उसका जी नहीं भरा है। वह पथ में बहुत दूर निकल आयी है। एक ५७ शत्रु-सैनिक आकर उससे कहता है - कल तुम्हारे सेनापति (विलास) मेरी स्त्री को पकड़लाया है। आज मैं तुम्हे जो विलास की स्त्री ५८ हो, पकड़ ले जाऊँ! लालसा चालाकी से, उससे बचना चाहती है। सैनिक का कहना है कि तुम्हारे देश के लोग केवल स्वर्ण लोलुम शृंगाल ही नहीं, बल्कि पशुओं से भी गये-बीते हैं। लालसा अपने काम-जाल में उसे फँसान चाहती है। वह उसे तिरस्कार, तुच्छ भावना से देखकर जाने देता है। लालसा उससे, अपनी स्त्री को छुड़ालेजाने को कहती है। उसके चले जाने के बाद ५९ - विलास आकर लालसा पर अपना क्रोध और अविश्वास व्यक्त करता हुआ कहता है - ओ अविश्वासिनी, स्त्री तूने मेरे पद, मर्यादा, वीरता का गौरव और ज्ञान की गरिमा को दबा दी। वह अतृप्त हृदय में छुरा डालकर मरना चाहता है। राज्य करने की इच्छा से, छोटी बातों पर ध्यान न देकर, अपनी प्रतिभा से शासन करना चाहता है। विवेक व्यंग्य बाण चोड़ता हुआ कहता है - ६० "मंत्री और सेनापति दोनों पद एक ही आधार पर हैं तो राजा भिन्न वस्तु नहीं हो सकता है। इसलिए हे, राजा-मंत्री, सेनापति,

कामना

हे, जन्म जीवन और मृत्यु, आपको नमस्कार।” विलास, उसको पागल या चतुर व्यक्ति है - नहीं पहचान पाता है। विवेक उन घायलों की सेवा करता है, जो लड़ाई में आहत हो गये हैं। विचार और विवेक को न छोड़ने और प्राण चाहे लेने पर विचार कर लेने को कहता है। आधुनिक व्यवस्था के अनुसार दुर्वृत्त संतोष ४३ से खेत का कर माँगता है। संतोष बोझ उठाता हुआ गिर पड़ता है। उसके पैर में चोट आती है। करुणा उसकी सेवा करती है। विलास के साधन के लिए धन और स्वर्ण की आवश्यकता है। विलास की महत्वाकांक्षा का अंत नहीं है। वह प्राकृतिक पदार्थों का अपव्यय और उसके कोष से अनावश्यक व्यय कर भावी जनता को दरिद्र और उनकी वृत्ति के उद्गम को बन्द कर देता है। वे अपने पूर्वजों के क्रण चुकाने के लिए भूखें ४३ मरेंगे। संतोष और करुणा सच्चे हैं। पर वे दोनों प्रकृति की दुर्बलताएँ हैं, उनके लिए सहानुभूति नहीं होनी चाहिए। वन लक्ष्मी क्रूर महत्वाकांक्षा से झुलस रहे कोमल कुटुंभ को आलंगित करना चाहती ४५ है। विलासिता के कारण परिवार में लड़का नीन्द से जागने के लिए मदिरा माँगता है। उसकी माता को गहनों की चिंता है। ४६ पति-पत्नी में जगड़ा होता है तो लड़का घर त्यागकर सैनिक बन, आनंद मनाना चाहता है। माँ के पहला बेटा भी ऐसे ही चला गया है। इसलिए डरकर उसे माँ ही मदिर देती हैं। ४७ नवीन नगर के एक गली में नागरिक विचार कर रहे हैं। यदि कामना उस नगर पर अत्याचार करेगी तो, उसके स्थान पर विलास को राजा बनाना चाहते हैं। फिर दंभदेव के यहाँ के उत्सव में चलने तैयार होते हैं। करुणा घायल संतोष को वैद्य क्रूर से चिकित्सा दिलाने ले आती है। वहाँ बिना अनुमति किसी

Changch.

के घर के सामने बैठना भी बुरा है। नगर रक्षक ऐसे लोंगों को पकड़कर ले जाता है। करुणा के पीछे मद्यप दुर्वृत्त उसे पकड़ने आता है। वह करुणा को न्यायालय से सहायता कराने की बात कहता है। उसे मद्य पिलाना चाहता है और एक चुंबन भी देता है। करुणा और संतोष वहाँ से चले जाना चाहते हैं तो दुर्वृत्त उन दोनों के संबन्ध पर शंकाशांकर तिरक्षक के हवाले करना चाहता है। दुर्वृत्त करुणा से व्यवहार लिखाकर न्यायालय से उसे सहायता कर, अपना कर्तव्य को निभाना चाहता है। क्रूर आकर 49 संतोष के पैर को काटकर अगले<sup>अगले</sup> करने की बात कहता है। नागरिक भी चिकित्सा के बिना उसे नहीं जाने देता है। दंभ आकर संतोष को देखते हैं और उस अस्पृष्ट्य को, उत्सव के समय में नहीं छूने को कहते हैं तो कल तक के लिए उन दोनों को अलग-अलग स्थानों पर बन्दी बनाकर रकना चाहते हैं। तुरंत विवेक आकर उन्हे छुड़ाकर ले जाता है। भूकंप से वह नगर उलट-पलट हो जाता है। विवेक आक्रांत देश के नागरिकों की सहायता से उनके देश की सीमा पर जो नया राज्य स्थापित हो गया है, जो विद्रोह कर रहे हैं, अत्याचार कर रहे हैं, इस देश के दो बन्दी लोगों को दण्ड मिलनेवाला है। उनकी रक्षा की जाने की बात विवेक कहता है। सब तैयार हो जाते हैं। एक बालिका को पीछा करते हुए दो मद्यप उसके साथ अत्याचार करना चाहते हैं। विवेक आकर उन सैनिकों को पकड़ लेता है और बालिका की रक्षा करता है। दोनों क्षमा माँगते हुए चले जाते हैं। सैनिक-न्यायालय में विचारणार्थ शत्रु सैनिक और उसकी स्त्री को हाजिर किया जाता है। विलास उस स्त्री के साथ अत्याचार न कर सकने पर दण्ड देना चाहता है। झूठा आरोप लगाकर उन दोनों को

वृक्ष से बाँध कर, तीर मार कर हत्या कर देते हैं। कई नागरिक आकर न्याय की माँग करते हैं तो कामना परेशान हो जाती है। कामना, राजकीय शासन का अर्थ हत्या और अत्याचार ही है तो वह रानी बनी रहना नहीं चाहती हुई मुकुट को उतारकर रख देती है और अपने देशवासियों के साथ, उस इन्द्रजाल की भयानकता से, मदिरा से सिंचे स्वर्ण-वृक्ष की छाया से चली जाती है। - “मदिरा और स्वर्ण के द्वारा लोगों में जो नवीन अपराधों की सृष्टि हुई, जिससे माता-पिता का स्नेह, शील का अनुरोध नहीं माना, उन्हे दण्ड का भागी होना पड़ा है। विलास और लालस को छोड़कर सब बदल जाते हैं) और अपने पूर्ववित् जिंदगी जीने के लिए तैयार होते हैं। विलास और लालसा नाव में बैठकर अनंत सागर में निकल जाते हैं। कामना और संतोष का मधुर मिलन के साथ, लीला, कामना, विनोद, विवेक आदि मिलकर सम्बोध स्वर में गाते हैं। फूलों वाले द्वीप में पहलेका-सा जीवन आरंभ होता है।